"किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन"

नीतू साहू
शोधार्थी (शिक्षा)
हे. य. वि. विद्यालय दुर्ग

डॉ. निशा श्रीवास्तव
प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय
आर्य नगर, दुर्ग

डॉ. पुष्पलता शर्मा
प्राध्यापक (शिक्षा विभाग)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भिलाई नगर, दुर्ग

सारांश – प्रस्तुत शोध में किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के ग्यारहवीं कक्षा के 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया, जिन्होंने डॉ. सुभाष सरकार एवं श्री प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित इन्टरनेट एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्युड स्केल तथा प्रोफेसर बीना शाह द्वारा निर्मित सुरक्षा-असुरक्षा मापनी पर अपनी प्रतिक्रिया दी। इस प्रकार प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 2x2x2 त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की संगणना की गयी। शोध द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव पाया जाता है किन्तु विद्यालय प्रकार के आधार पर अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शासकीय या अशासकीय विद्यालयों में अध्ययन का विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर कोई प्रभाव नहीं पाया जाता है। लिंग के आधार पर अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि छात्राओं में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना छात्रों की तुलना में अधिक है।

1. **प्रस्तावना** – 21वीं सदी को प्रतियोगिता की सदी के रूप में दर्शाया जा सकता है। विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में हुए विकास के साथ, विश्व का कोई भी हिस्सा इस प्रतियोगिता से अनछुआ नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में देखने पर विद्यार्थियों में यह प्रतियोगिता तेजी से बढ़ी है जिसके परिणामस्वरुप विद्यार्थियों की पाठ्यचर्या एवं सह-पाठ्यचर्या सम्बन्धी गतिविधियों में

जबरदस्त विस्तार पाया गया है किन्तु इस प्रतिस्पर्धात्मक परिवेश ने विद्यार्थियों में असुरक्षा की भावना, चिंता, बुरी संगति, स्वयं में संघर्ष, तनाव एवं कुसमायोजन आदि समस्याओं को उत्पन्न किया है। प्रतिस्पर्धा इस हद तक बढ़ गयी है कि विद्यार्थी अपनी आयु की तुलना में अतिरिक्त शैक्षणिक भार उठाने के लिए बाध्य है। यह अतिरिक्त दबाव उनमें मनोवैज्ञानिक तनाव उत्पन्न करने के साथ-साथ असुरक्षा की भावना को भी उत्पन्न करता है। इस अतिरिक्त दबाव को दूर करने हेतु तथा अपनी शैक्षिक समस्याओं का समाधान प्राप्त करने हेतु विद्यार्थी इन्टरनेट व सोशल मीडिया का सहारा लेता है। प्रस्तुत शोध में किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

2. **समस्या** – वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। आज विश्व भर में तकनीकी प्रगति ने मानव को अपने जीवन शैली, अध्ययन, व्यवसाय व संबंधों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील व सचेत बना दिया है। इस तकनीकी प्रगति ने कुछ समस्याओं को भी जन्म दिया है जिसमें से एक प्रमुख समस्या है सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव। सोशल मीडिया ने जहां एक ओर किसी भी आयु व किसी भी देश के लोगों को जोड़कर विभिन्न सुविधायें व लाभ प्रदान किया है वहीँ इसके अत्यधिक व असीमित उपयोग ने अनेक समस्याएँ भी उत्पन्न की है जिनमें से एक प्रमुख समस्या सुरक्षा-असुरक्षा की भावना से सम्बंधित है। यही कारण है कि प्रस्तुत शोध हेतु इस समस्या का चयन किया गया है – "**किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन**"।

3. **अध्ययन का उद्देश्य –** किशोरों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार के मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

4. **अध्ययन की परिसीमा –**

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित परिसीमाएं हैं –

- प्रस्तुत शोध हेतु छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के दुर्ग एवं पाटन विकासखंड का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण कार्य हेतु शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 11वीं कक्षा के किशोर विद्यार्थियों का चयन न्यादश के रूप में किया गया है।
- प्रस्तुत शोध हेतु शासकीय तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 300–300 अर्थात कुल 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
- उपकरण के रूप में सुभाष सरकार एवं प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित "**इन्टरनेट एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्युड स्केल**" द्वारा सोशल मीडिया का प्रभाव तथा प्रोफेसर बीना शाह द्वारा निर्मित "**सुरक्षा–असुरक्षा मापनी**" द्वारा सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का मापन किया गया।

5. **सम्बंधित साहित्य का अध्ययन –**

सोशल मीडिया से सम्बंधित अध्ययन –

- **हाशेम (2015)** ने विद्यालयीन विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष दिया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति और सोशल मीडिया के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।

- **ओवुसू(2015)** ने विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया साइट्स के उपयोग का प्रभाव पर अध्ययन किया और शोध से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सोशल मीडिया विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है तथा सोशल मीडिया के उपयोग एवं शैक्षिक निष्पादन के बीच में प्रबल धनात्मक सहसंबंध होता है। अध्ययन से यह भी पुष्टि हुई कि अधिकाँश प्रत्युत्तरदाता सोशल मीडिया साइट्स का उपयोग शैक्षिक उद्देश्य के बजाय चैट करने के लिए करते हैं।
- **काया एवं बिसेन(2016)** ने विद्यार्थियों के व्यवहार पर सोशल मीडिया के प्रभाव तथा फेसबुक को एक केस स्टडी के रूप में अध्ययन किया और पाया कि सोशल मीडिया व्यवहारमीडिया सोशल , में प्रतिभागिता और आत्मविश्वास के बीच धनात्मक सहसंबंध है जो कि मुख्य रूप से फेसबुक उपयोग पर आधारित निष्कर्ष है। विद्यार्थी और उसके अनुचित उपयोग को लेकर सचेत पाए गए विद्यार्थी सोशल मीडिया पर अपनी सामाजिक पहचान की सुरक्षा को लेकर अपने मित्र की फेसबुक अकाउंट की निजता को लेकर सचेत हैं जो कि एक अच्छा संकेत है।
- **क्रिस्टोफरसन(2016)** ने किशोरों के सामाजिक व संवेगात्मक विकास को सोशल नेटवर्किंग साइट्स किस प्रकार प्रभावित कर रहा है ? पर एक व्यवस्थित समीक्षा किया। व्यवस्थित 15 लेखों की समीक्षा के पश्चात प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स का किशोरों के सामाजिक व संवेगात्मक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया गया कि किशोरों द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग का उनके सामाजिक व संवेगात्मक विकास पर लाभ भी है और जोखिम भी।

- **बर्नार्ड एवं जैन्जा (2018)** ने घाना के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि विद्यार्थियों के लिए चाहे वे एक दूसरे से दूर हों या पास, सोशल मीडिया सूचनाओं के आदान प्रदान, संबंधों के निर्माण, समूह चर्चा में सहभागिता के रूप में लाभप्रद होने के बाद भी कुछ सीमित आदतों एवं अवधान में उद्विग्नता जैसे लक्षण पाए गए जो विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन पर गंभीर दुष्परिणाम प्रदर्शित करते हैं।

सुरक्षा-असुरक्षा की भावना से संबंधित अध्ययन –

- **रैना एवं सुम्बाली (2013)** द्वारा किये गए अध्ययन में लड़कों की तुलना में लड़कियों में असुरक्षा की भावना अधिक पाई गई। साथ ही एकल परिवार के किशोरों में संयुक्त परिवार के किशोरों की तुलना में असुरक्षा की भावना अधिक पाई गई। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि प्रथम तथा मध्य में जन्में बच्चों में, अंत में जन्में बच्चे की तुलना में असुरक्षा की भावना अधिक होती है।
- **मनीषा (2016)** ने किशोरों में उनके घर के वातावरण से सम्बंधित सुरक्षा-असुरक्षा विषय पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकला कि लड़कों की सुरक्षा तथा उनके पारिवारिक वातावरण के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है जबकि लड़कियों की असुरक्षा की भावना तथा उनके पारिवारिक वातावरण के बीच सार्थक सम्बन्ध है। साथ ही यह भी पाया गया कि लड़के और लड़कियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के बीच सार्थक अंतर है।
- **त्रिपाठी एम. (2018)** ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षित व्यक्ति भी आत्मविश्वास के अभाव में असुरक्षा की भावना तथा हीनता की भावना से ग्रस्त हो जाते हैं।

- **लारसेन (2020)** ने युवा वयस्कों के दैनिक जीवन में सोशल मीडिया से असुरक्षा पर अध्ययन किया और पाया कि विभिन्न सोशल मीडिया एप्स के डिजाईन तथा उनके वर्तमान अपडेट्स से संबंधित विभिन्न प्रकार की असुरक्षा की भावनाओं का प्रकटीकरण होता है जो कि उपयोगकर्ता पर किसी न किसी प्रकार से नकारात्मक प्रभाव डालता है। शोध के विश्लेषण से यह निष्कर्ष पाया गया कि युवा वयस्क अपने दैनिक जीवन में समूहीकरण तथा समवयस्कों से जुड़ाव के उद्देश्य से असुरक्षा की भावना महसूस करते हैं।

6. परिकल्पना –

H_1 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_2 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_3 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर विद्यालय प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_4 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_5 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_6 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_7 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

7. **न्यादर्श** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के कुल 600 किशोर विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

8. **उपकरण** – प्रस्तुत अध्ययन से सम्बंधित प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –

i. सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सुभाष सरकार एवं प्रसेनजीत दास द्वारा निर्मित "**इन्टरनेट एवं सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटिट्युड स्केल**" जिसमें 50 कथन हैं। इनमें 25 कथन धनात्मक तथा 25 कथन ऋणात्मक प्रकार के हैं।

ii. सुरक्षाअसुरक्षा की भावना- का मापन करने के लिए प्रोफेसर बीना शाह द्वारा निर्मित "**सुरक्षा-असुरक्षा मापनी**" जिसमें 42 कथन हैं। इनमें 2 कथन धनात्मक तथा 40 कथन ऋणात्मक प्रकार के हैं।

9. **प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण, व्याख्या एवं विवेचना –**

प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 2X2X2 त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गयी है –

H_1 **किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।**

तालिका क्र. 1

विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार का प्रभाव

स्त्रोत	वर्गों का योग	df	वर्गों का मध्यमान	F मान
सोशल मीडिया	34207.889	1	34207.889	73.227 **
लिंग	5034.745	1	5034.745	10.778 **
विद्यालय	129.079	1	129.079	0.276
सो.मी.Xलिंग	218.384	1	218.384	0.467
सो.मी.Xवि.	8076.756	1	8076.756	17.290 **
लिंगXवि.	227.916	1	227.916	0.488
सो.मी.XलिंगXवि.	135.97	1	135.970	0.291
त्रुटि	276550.897	592	467.147	-
योग	7479270	600	-	-
संशोधित योग	323612.373	599	–	–
* is significant at level of 0.05 and ** is significant at level of 0.01				

तालिका क्र. 1 से यह स्पष्ट है कि सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन हेतु प्रदत्तों के विश्लेषण में F मान 73.227 (df-592) पाया गया। यह F मान 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया अर्थात सोशल मीडिया का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को अस्वीकार किया जाता है। इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव पाया जाता है।

तालिका क्रमांक 2

उच्च एवं निम्न सोशल मीडिया उपयोगकर्ता विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

सोशल मीडिया	**मध्यमान**	**मानक विचलन**
उच्च	117.022	4.882
निम्न	101.789	5.006

तालिका क्रमांक 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च सोशल मीडिया वाले विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का मध्यमान 117.022 एवं मानक विचलन 4.882 है जो कि निम्न सोशल मीडिया वाले विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के मध्यमान एवं मानक

विचलन से जो कि क्रमशः 101.789 एवं 5.006 है, से अधिक है। इस अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च सोशल मीडिया वाले विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना निम्न सोशल मीडिया वाले विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना से अधिक है।

H_2 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पष्ट है कि लिंग के आधार पर सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का एफ मान 10.778 (df-592) पाया गया। यह एफ मान 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इस गणना से यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर लिंग का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को अस्वीकार किया जाता है।

तालिका क्रमांक 3

लिंग के आधार पर सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

लिंग	मध्यमान	मानक विचलन
छात्र	106.483	4.961
छात्रा	112.328	4.927

तालिका क्रमांक 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्रों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का मध्यमान 106.483 एवं मानक विचलन 4.961 है जो कि छात्राओं की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना

के मध्यमान एवं मानक विचलन से जो कि क्रमशः 112.328 एवं 4.927 है, से कम है। इस अवलोकन से स्पष्ट है कि छात्राओं में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना छात्रों की तुलना में अधिक है।

H_3 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर विद्यालय का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पष्ट है कि विद्यालय के लिए सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का एफ मान 0.276 (df-592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। इस गणना से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर विद्यालय प्रकार का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को स्वीकार किया जाता है।

H_4 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पष्ट है कि सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया के लिए सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का एफ मान 0.467 (df-592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। इस गणना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को स्वीकार किया जाता है।

H_5 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय का सार्थक प्रभाव पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पष्ट है कि सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के लिए सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का एफ मान 17.290 (df-592) पाया गया। यह एफ मान 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। इस गणना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सार्थक प्रभाव पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को अस्वीकार किया जाता है।

तालिका क्रमांक 4

सोशल मीडिया एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं मानक विचलन

विद्यालय प्रकार	सोशल मीडिया	मध्यमान	मानक विचलन
शासकीय	निम्न	98.556	6.656
	उच्च	121.191	7.263
अशासकीय	निम्न	105.022	7.478
	उच्च	112.853	6.527

तालिका क्रमांक 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च सोशल मीडिया उपयोगकर्ता अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के प्राप्तांकों का मध्यमान 121.191 एवं मानक विचलन 7.263 है जो कि निम्न सोशल मीडिया उपयोगकर्ता अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के मध्यमान 98.556 एवं मानक विचलन 6.656 से अधिक है।

इसी प्रकार के परिणाम शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा उच्च एवं निम्न सोशल मीडिया उपयोग की स्थिति में भी प्राप्त हुए। उच्च सोशल मीडिया उपयोगकर्ता शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का मध्यमान 112.853 एवं मानक विचलन 6.527 है जो कि निम्न सोशल मीडिया उपयोगकर्ता शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के मध्यमान 105.022 एवं मानक विचलन 7.478 से अधिक है।

प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि विद्यालय प्रकार का विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है किन्तु सोशल मीडिया का उपयोग विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना को प्रभावित करता है। यही कारण है कि शासकीय व अशासकीय दोनों ही विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने पर सुरक्षा-असुरक्षा की भावना के लिए प्राप्त मध्यमान एवं मानक विचलन का मान तालिका क्र. 4 के अनुसार अधिक तथा सोशल मीडिया का कम उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के लिए मध्यमान व मानक विचलन कम प्राप्त हुआ।

H_6 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर लिंग एवं विद्यालय का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट है कि लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के लिए सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का एफ मान 0.488 (df-592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को स्वीकार किया जाता है।

H_7 किशोरों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पष्ट है कि सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया के लिए सुरक्षा-असुरक्षा की भावना का एफ मान 0.291 (df-592) पाया गया। यह एफ मान सार्थक नहीं पाया गया। इस गणना से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना कि "विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का प्रभाव सार्थक नहीं पाया जायेगा" को स्वीकार किया जाता है।

10. निष्कर्ष –

प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया का सार्थक प्रभाव पाया गया।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। छात्राओं में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना छात्रों से अधिक पाई गयी।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर विद्यालय प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं लिंग की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया एवं विद्यालय प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव पाया गया।
- अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों में उच्च सोशल मीडिया उपयोगकर्ता विद्यार्थियों में निम्न सोशल मीडिया उपयोगकर्ता विद्यार्थियों की तुलना में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना अधिक पाई गयी।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।
- विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया ,लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

- विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर सोशल मीडिया ,लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सोशल मीडिया विद्यार्थियों को अपने साथी, शिक्षक, दूरस्थ रिश्तेदारों या पारिवारिक सदस्यों तथा अन्य लोगों के साथ जुड़ने का एवं अपने विचारों, बातों तथा रुचियों को साझा करने का अवसर प्रदान करता है। इसके साथ ही सोशल मीडिया व इन्टरनेट के द्वारा सभी को यह अवसर मिलता है कि व्यक्ति अपनी इच्छानुसार अच्छे या बुरे मनःस्थिति में सोशल मीडिया से जुड़कर अपना समय बिता सकता है, हंस सकता है, अपने अकेलेपन को दूर कर सकता है तथा बेहतर महसूस कर सकता है।

छात्राओं में छात्रों की तुलना में सुरक्षा-असुरक्षा की भावना अधिक पाई गयी। इसका कारण यह है कि वर्तमान में महिला सुरक्षा को लेकर जागरूकता से सम्बंधित अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। साथ ही आज विद्यालय स्तर पर छात्राओं को महिला सुरक्षा सम्बन्धी अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाता है जिससे छात्राओं में सुरक्षा की भावना के स्तर में निश्चित रूप से वृद्धि हुई है।

विद्यालय का प्रकार शासकीय हो अथवा अशासकीय, विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि वर्तमान में शासन द्वारा विद्यालय में विद्यार्थियों की सुरक्षा हेतु स्पष्ट निर्देश जारी किये जाते हैं जैसे कि शाला के भवन का सुरक्षित होना, स्वास्थ्य सुरक्षा, आवागमन की सुविधा एवं सुरक्षा आदि को ध्यान में रखा जाता है। साथ ही शाला प्रबंधन एवं विकास समिति का गठन किया जाता है जिससे विद्यार्थियों की सुरक्षा की

जिम्मेदारी का निर्वहन सही ढंग से किया जा सके। इस कारण शासकीय या अशासकीय विद्यालय में अध्ययन का विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना पर सार्थक नहीं पाया गया।

सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय के तालिकाओं से प्राप्त स्वतंत्र आंकड़ों में केवल विद्यालय प्रकार के आंकड़े सार्थक नहीं पाए गए जबकि उनके अंतःक्रियात्मक आंकड़ों का अध्ययन किये जाने पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उनमें केवल सोशल मीडिया एवं विद्यालय के अंतःक्रियात्मक आंकड़े ही सार्थक पाये गये। इस आधार पर स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया, लिंग एवं विद्यालय की अंतःक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन किये जाने पर संयुक्त परिणाम भी सार्थक नहीं पाया गया।

संदर्भित ग्रन्थ सूची –

- Hashem, Y. (2015). The impact of social media on the academic achievement of school Students.International journal of bussiness administration, Vol.6, No.1, pp 46-52.
- Owusu, A. M. (2015). Use of Social Media and its Impact on Academic Performance of Tertiary Institution Students. A Study of Students of Koforidua Polytechnic, Ghana Vol.6, No.6, pp. 94.
- Kaya, T. & Bisen H. (2016). The effects of social media on students behaviors; Facebook as a case study.Elsevier journal/ Computers in human behavior Vol. 59 pp. 374-379.
- Christofferson & Jenna P.(2016). How Is Social Networking Sites Effecting Teen's Social and Emotional Development : A Systemic Review.School of Social Work St. Paul, Minnesota In.: https://sophia.stkate.edu/msw_papers/ 650.
- Bernard, Kolan J. & Patience E. D.(2018). Effect of Social Media on Academic Performance of Students in Ghanaian Universities. A Case Study of University of Ghana, Legon. Library Philosophy and Practice 2018.
- Raina, S. & Sumbali K. (2013). A study of security–insecurity feelings among adolescents in relation of sex, family system and ordinal problem. International journal of educational planning and administration Vol. 3, No.1, pp 51-60.
- Manisha (2016). Security-Insecurity among adolescents as related to their home environment. International journal of advance research in education & technology. Vol.3, issue-2 pp. 59-61.
- Tripathi, M. (2018). A self study of self-confidence and inferiority Insecurity feeling as related to academic achievement. International book service/Lap lambert academic

publication, ISBN 978613984194-3, pp1-10.

- Larsen, M.C. (2020) Social Media Insecurities in Everyday Life Among Young Adults – an Ethnography of Anonymous Jodel Disclosures. AoIR Selected Papers of Internet Research, October 2020. https://doi.org/10.5210/spir.v2020i0.11258